मिलावटी खाद्य पदार्थों से पुरुषों में नपुंसकता एवं महिलाओं में हो रहा बांझपन

कानपुर (नगर छाया समाचार)। ग्वालटोली स्थित आरोग्यधाम में दीपावली की पूर्व संध्या पर जागरूकता संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें दीपावली और स्वास्थ्य नामक विषय पर बोलते हुए आरोग्यधाम के वरिष्ठ होम्योपैथिक चिकित्सक डॉ हेमंत मोहन ने बताया की कल कारखानों द्वारा निकले हुए एवं शहर में विभिन्न जगहों पर की गई खुदाई से उत्पन्न धूल कणों से शहर में प्रदूषण का स्तर वैसे भी खतरनाक स्तर पर पहुंच चुका है उस पर दीपावली में फोड़े जा रहे निम्न स्तर के पटाखों का धुआं इस स्तर को और खतरनाक बना रहा है । डॉ हेमंत मोहन ने बताया की इस धुएं से बीपी एवं शुगर के मरीजों को एवं कोरोना काल में जिन मरीजों को फेफड़े का गंभीर इंफेक्शन हो चुका है उन्हें विशेष तौर पर बच कर रहना चाहिए । आरोग्यधाम के संस्थापक श्री आरआर मोहन ने बताया की प्रशासन द्वारा मिलावटी खोए एवं खाद्य पदार्थों की जांच के नाम पर सिर्फ खानापूरी करने की वजह से शहर में बड़े स्तर पर मिलावटी खोए एवं उन से बनी मिठाइयों की निर्माण एवं आपूर्ति हो रही है जिससे शहरवासियों को लिवर, किडनी एवं हृदय की कई गंभीर बीमारियां होने का खतरा बना हुआ है। आरोग्यधाम की वरिष्ठ स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉक्टर आरती मोहन ने बताया की इन मिलावटी खाद्य पदार्थों की वजह से महिलाओं में बच्चेदानी में रसौली, बांझपन या कैंसर तक की संभावना बनी रहती है। नमामि गंगे परियोजना के प्रदेश अध्यक्ष श्री कृष्ण दीक्षित बड़े जी ने पटाखों के शोर द्वारा जीव जंतुओ को होने वाली परेशानियों पर गहरा दुख एवं रोष व्यक्त किया। समाजसेवी दीपांशु पांडे, एलआईसी के जरनल मैनेजर पशुपति मल्होत्रा, सलोनी मल्होत्रा ने शहरवासियों से सिर्फ मानक युक्त दुकानों से मिठाईयां खरीदने का आग्रह किया। कार्यक्रम में उपस्थित सभी सम्मानित गणों ने शहरवासियों से इको फ्रेंडली ग्रीन दिवाली मनाने का आग्रह किया । कार्यक्रम में आशीष यादव, श्रुति, सौम्या, अंकित शुक्ला, शिवम खन्ना समेत 40 से अधिक लोग उपस्थित रहे।

रबी फसलों की बुवाई हेतु किसान करें तैयारियां: डॉ. रामनरेश

कानपुर (नगर छाया समाचार)। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद अटारी जोन 3 कानपुर के वरिष्ठ शोध अध्येयता डॉ रामनरेश ने किसानों को रबी फसलों की बुवाई हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि रबी फसलों की बुवाई के समय कम तापमान तथा पकते समय शुष्क एवं गर्म वातावरण की आवश्यकता होती है। उन्होंने बताया कि इस समय बुवाई की हुई फसलों में कम सिंचाईयों की आवश्यकता होती है। तथा फसलों को बढ़ने हेतु कम नमी की भी आवश्यकता होती है। डॉक्टर रामनरेश ने बताया कि रबी फसले जैसे गेहूं,चना, मटर, मसूर,राई,सरसों,अलसी,कुसुम,मक्का एवं आलू इत्यादि फसलों की बुवाई पूर्व बीजों का शोधन किसान भाई अवश्य करें जिससे रोग एवं कीटों का प्रबंधन हो जाता है और फसल गुणवत्ता परक पैदा होती है। किसानों को आर्थिक लाभ होता है।

गेहूं की वैज्ञानिक विधि से बुवाई कर बढ़ाएं उत्पादन: डॉ. रामप्रकाश

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ रामप्रकाश ने किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। डॉक्टर प्रकाश ने बताया कि देश की प्रमुख फसल गेहूं की बुवाई का समय आ रहा है। किसान भाई फसल की अधिक पैदावार के लिए इस समय बीज से लेकर खेत की तैयारी, बुवाई का समय, बीजों की ऊंत किस्मों का चयन और बुवाई की विधि के अलावा खाद एवं उर्वरक को लेकर तैयारी करें। उन्होंने कहा कि रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से प्रत्येक वर्ष प्रयोग करने से उत्पादन क्षमता घट जाती है। इसके लिए किसान जैविक खादों का समन्वित प्रयोग करें या फिर कंपोस्ट खाद के प्रयोग से फसल को लाभ होता है। अधिक आवश्यकता होने पर ही रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करें। डॉ रामप्रकाश ने बताया कि किसान गेहूं की बुवाई के पूर्व अपने खेत की जुताई तीन से चार बार मृदा को काफी महीन तरीके से करें।और उस पर फैले खरपतवार व फसल अपशिष्ट का प्रबंध कर के नष्ट करे। गेहूं की ऊंत किस्मों का किसान भाई चयन करें।

जिससे गेहूं की पैदावार अधिक हो और खेत में छोटी-छोटी क्यारियां बना लें। जिससे सिंचाई करते समय पानी एक स्थान पर एकत्रित न होकर पूरे खेत की फसल को मिले। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि किसान भाई गेहूं की फसल में सूचहम पोषक तत्वों का ही प्रयोग करें।जिससे किसानों को गेहूं की फसल से अधिक लाभ हो सके।

दैनिक जागरण कानपुर 24/10/2022

बोआई से पहले बीज का करें शोधन

कानपुर: भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के कृषि तकनीक अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान (अटारी) जोन तीन के वरिष्ठ शोधार्थी डा. रामनरेश ने किसानों को रबी फसलों की बोआई से पूर्व बीजों का शोधन करने की सलाह दी है। उन्होंने बताया कि इस समय बोई गई फसलों में कम सिंचाई की जरूरत पड़ती है। गेहूं, चना, मटर, मसूर, राई, सरसों, अलसी, मक्का व आलू आदि फसलों की बोआई से पूर्व बीजों का शोधन करने से रोग व कीटों का प्रबंधन होता है और फसल गुणवत्तापरक पैदा होती है। वहीं, चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के अध्यक्ष डा. रामप्रकाश ने कहा कि किसान गेहूं की अधिक पैदावार के लिए बीज से लेकर खेत की तैयारी भी करें। उन्नत बीज और जैविक या कंपोस्ट खाद का प्रयोग करें। खेत की जोताई तीन से चार बार महीन तरीके से करें और खरपतवार व फसल अपशिष्ट प्रबंधन करें। खेत में छोटी-छोटी क्यारियां बना लें, ताकि सिंचाई करते समय पानी एक स्थान पर एकत्र न हो। वि.

राष्ट्रीय
सहारा
कानपुर • सोमवार • 24 अक्टूबर • 2022

सल बुआई पूर्व बीज शोधन अवश्य करें किसान

हारा न्यूज ब्यूरो

पुर।

सलों की बुआई की तैयारी में जुटे नों के लिए सीएसए कृषि एवं ाकी विवि के वैज्ञानिकों ने सलाह की है। वैज्ञानिकों ने कहा है कि रबी जैसे गेहूं, चना, मटर, मसूर, राई, अलसी, कुसुम, मक्का , आलू फसलों की बुआई से पूर्व किसान भाई का शोधन जरूर करें। इससे रोग एवं से बचाव होता है और फसल बेहतर ।

ीएसए के दलीपनगर कृषि विज्ञान अध्यक्ष डॉ.राम प्रकाश ने बताया कि ी प्रमुख फसल गेहूं की बुआई का आ रहा है। किसान फसल की पैदावार के लिए इस समय बीज से खेत की तैयार करने का काम करें। के लिए उन्नत किस्मों का चयन करें। उर्वरक को लेकर भी जरूरी तैयारी

रबी फसलों की बुआई की तैयारी में लगे किसानों को सीएसए की सलाह

कर लें।

उन्होंने किसानों को जैविक उर्वकर का प्रयोग करने को कहा है, क्योंकि रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से भूमि की उपज क्षमता निरंतर कम होती जाती है। उन्होंने अधिक आवश्यकता होने पर ही रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करने की सलाह किसानों को दी है। उन्होंने कहा कि किसान गेहूं की बुआई से पूर्व खेत की जुताई तीन से चार बार काफी महीन तरीके से कर लें और उस पर फैले खरपतवार व फसल अवशिष्ट को नष्ट कर दें। छोटी-छोटी क्यारियां बना लें, जिससे सिंचाई करते समय पानी के एक स्थान पर एकत्रित न होकर पूरे खेत की फसल को मिले।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद अटारी जोन 3 कानपुर के वरिष्ठ शोध अध्येता डॉ.राम नरेश ने बुआई पूर्व बीज शोधन पर जोर दिया है। उनके मुताबिक इस समय बुआई की हुई फसलों में कम सिंचाई की आवश्यकता होती है। रबी फसलों की बुआई के समय कम तापमान व पकते समय शुष्क एवं गर्म वातावरणण की आवश्यकता होती है तथा फसलों को बढ़ने के लिए नमी की आवश्यकता भी होती है, इसलिए समय पर सिंचाई बहुत जरूरी है।

अमर उजाला कानपुर 24/10/2022

गेहूं की फसल में जैविक खाद का करें प्रयोग

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके) दलीप नगर के अध्यक्ष और वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. रामप्रकाश ने रविवार को किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की। उन्होंने बताया कि देश की प्रमुख फसल गेहूं की बुवाई का समय आ रहा है। रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से उत्पादन क्षमता घट जाती है। इसके लिए किसान जैविक खाद या कंपोस्ट खाद का प्रयोग करें। किसान गेहूं की बुवाई के पूर्व अपने खेत की जुताई तीन से चार बार करें। उसमें फैले खरपतवार व फसल अपशिष्ट को नष्ट करें। बुवाई के समय गेहूं की उन्नत किस्मों का चयन करें। गेहूं की पैदावार अधिक हो इसके लिए छोटी-छोटी क्यारियां बना लें। (संवाद)

गेहूं की वैज्ञानिक विधि से बुवाई कर बढ़ाएं उत्पादनः रामप्रकाश

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ रामप्रकाश ने किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। डॉक्टर प्रकाश ने बताया कि देश की प्रमुख फसल गेहूं की बुवाई का समय आ रहा है। किसान भाई फसल की अधिक पैदावार के लिए इस समय बीज से लेकर खेत की तैयारी, बुवाई का समय, बीजों की उन्नत किस्मों का चयन और बुवाई की विधि के अलावा खाद एवं उर्वरक को लेकर तैयारी करें। उन्होंने कहा कि रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से प्रत्येक वर्ष प्रयोग करने से उत्पादन क्षमता घट जाती है। इसके लिए किसान जैविक खादों का समन्वित प्रयोग करें या फिर कंपोस्ट खाद के प्रयोग से फसल को लाभ होता है। अधिक आवश्यकता होने पर ही रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करें। डॉ रामप्रकाश ने बताया कि किसान गेहूं की बुवाई के पूर्व अपने खेत की जुताई तीन से चार बार मृदा को काफी महीन तरीके से करें।और उस पर फैले खरपतवार व फसल अपशिष्ट का प्रबंध कर के नष्ट करे। गेहूं की उन्नत किस्मों का किसान भाई चयन करें। जिससे गेहूं की पैदावार अधिक हो और खेत में छोटी-छोटी क्यारियां बना लें। जिससे सिंचाई करते समय पानी एक स्थान पर एकत्रित न होकर पूरे खेत की फसल को मिले। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि किसान भाई गेहूं की फसल में सुचहम पोषक तत्वों का ही प्रयोग करें। जिससे किसानों को गेहूं की फसल से अधिक लाभ हो सके।

अधिकतम तापमान 28.00° >> न्यूनतम तापमान 16.00° >> सूर्योदय 6:25 >> सूर्यास्त 17:39 >> डॉलर 82.54 >> यूरो

दैनिक भास्कर

देश का विश्वसनीय अखबार

लखनऊ | वर्ष-07, अंक-23 | सोमवार, 24 अक्टूबर 2022 | कुल पृष्ठ 17 | मूल्य 3.00 रुपये

झांसी, नोएडा, लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित

वैज्ञानिक विधि से गेहूं की बुवाई कर बढ़ाएं उत्पादन : डॉ. राम प्रकाश

भास्कर ब्यूरो

कानपुर। सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ रामप्रकाश ने किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। डॉक्टर प्रकाश ने बताया कि देश की प्रमुख फसल गेहूं की बुवाई का समय आ रहा है। किसान भाई फसल की अधिक पैदावार के लिए इस समय बीज से लेकर खेत की तैयारी, बुवाई का समय, बीजों की उन्नत किस्मों का चयन और बुवाई की विधि के अलावा खाद एवं उर्वरक को लेकर तैयारी करें।

उन्होंने कहा कि रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से प्रत्येक वर्ष प्रयोग करने से उत्पादन क्षमता घट जाती है। इसके लिए किसान जैविक खादों का समन्वित प्रयोग करें या फिर कंपोस्ट खाद के प्रयोग से फसल को लाभ होता है। अधिक आवश्यकता होने पर ही रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करें। डॉ रामप्रकाश ने बताया कि किसान गेहूं की बुवाई के पूर्व अपने खेत की जुताई तीन से चार बार मृदा को काफी महीन तरीके से करें और उस पर फैले खरपतवार व फसल अपशिष्ट का प्रबंध कर के नष्ट करे। गेहूं की उन्नत किस्मों का किसान भाई चयन करें। जिससे गेहूं की पैदावार अधिक हो और खेत में छोटी-छोटी क्यारियां बना लें। जिससे सिंचाई करते समय पानी एक स्थान पर एकत्रित न होकर पूरे खेत की फसल को मिले। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि किसान भाई गेहूं की फसल में सूचहम पोषक तत्वों का ही प्रयोग करें।जिससे किसानों को गेहूं की फसल से अधिक लाभ हो सके।